

Continue.

Leadership. — Traits theory.

Trait theory इस सिद्धान्त की महान-मानव सिद्धान्त भी कहा जाता है। नेतृत्व की व्याख्या करने के प्रारम्भिक प्रयासों के फलस्वरूप इस सिद्धान्त का जन्म हुआ। यह सिद्धान्त इस विश्वास पर आधारित है कि नेता जन्मजात होता है, बनाया नहीं जाता। इस सिद्धान्त के अनुसार महान मानव या नेता में कुछ ऐसे खास-खास जन्मजात शीलगुण होते हैं जिनके कारण वह अपने अनुयायियों से अधिक प्रभावकारी होता है। नेता समूह का नेता बन जाता है इन शीलगुणों के संघटन के कारण नेता हर परिस्थिति में प्रभावकारी होता है। मार्टिन लूथर किंग, महात्मा गांधी, हिटलर आदि नेताओं में कुछ ऐसे ही असाधारण शीलगुण थे जो उन्हें अनुयायियों में नही बंटुआ जिनके कारण वे प्रभावकारी नेता के रूप में लोगों के सामने उभरे आये।

Assumptions :-

(i) इस सिद्धान्त की पहली महत्वपूर्ण पूर्वकल्पना यह है कि नेतृत्व एक सामान्य गुण होता है एक व्यक्ति जो नेता बन गया वह सभी परिस्थितियों में एक समूह में नेता बन जाएगा। कुछ ऐसे प्रायोगिक संश्लेष हैं जो इस पूर्वकल्पना का समर्थन करते हैं। जैसे, डव्नेयर (1953) तथा जॉब्स (1947) ने अपने प्रयोगों में पाया कि व्यवस्थित संश्लेष संश्लेष को हटाकर दूसरे संश्लेष में रख दिया जाता है तो वह वहां भी संश्लेष का नेता बन जाता है।

परन्तु अनेकों ऐसे अध्ययन हुए हैं जिनसे यह साबित हो जाता है कि नेहरू एक सामान्य गुण नहीं हैं।

Carver & Nixon (1949) तथा मेरी (1949)

किए गए महत्वपूर्ण अध्ययनों ने साबित कर दिया है कि नेहरू एक सामान्य गुण नहीं हैं और एक परिस्थिति में नेता होना इस बात की कोई गारंटी नहीं देता है कि वह अन्य परिस्थितियों में भी नेता होगा।

(ii) अन्य सिद्धान्त की दूसरी Assumption यह है कि नेता में कुछ असाधारण शीलगुण होते हैं जो उन्हें अपने अनुयायियों से भिन्न कर देते हैं।

अनेकों ऐसे अध्ययन किए गए हैं जिनमें यह स्थापित करने की कोशिश की गई है कि कौन-कौन से शीलगुण हैं जिनके होने से व्यक्ति समूह का नेता बन जाता है। Stogdill (1948) ने इन प्रसंगों में किए गए 124 अध्ययनों के परिणामों का तथा Mann (1959) ने 138 ऐसे अध्ययनों का सर्वेक्षण और इन दोनों ने पाया कि तीन तरह के शीलगुण प्रमुख व्यक्तियों के होने पर कोई भी समूह का नेता बन जाता है —

(A) आशीरिक शीलगुण

(B) व्यक्तिगत शीलगुण

(C) अर्जित शीलगुण